Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XX, Oct-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

इक्कीसवी शताब्दी में हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरुप

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XX, October-2015, ISSN 2230-7540

इक्कीसवी शताब्दी में हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरुप

Manjusa Rani

Hindi Lecturer, Shri Durga Mahila College, Tohana (Haryana)

----------X----------

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। यह एक समृद्ध और विकसित भाषा है और हमारी अस्मिता की पहचान है।1 हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत भी है।2 सरलता बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है।3 हिन्दी का इतिहास लगभग 1200 साल पुराना है और वह सरहपा (8वीं शताब्दी) से लेकर वर्तमान 21 वीं शताब्दी तक गंगा की अनाहत अविरल धारा के समान प्रवाहमान है।

21 वीं शताब्दी अत्याधिक तीव्र परिवर्तनों वाली शताब्दी सिद्ध हो रही है। विज्ञान एवं तकनीक के सहारे पूरी दुनिया एक वैश्विक गांव में तब्दील हो रही है।4 वर्तमान विश्व व्यवस्था आर्थिक, व्यापारिक आधार पर पुनर्गठित हो रही है। ऐसे में भारत अपनी बढ़ती आर्थिक हैसियत के साथ तेजी से विश्व पटल पर उभर रहा है। भारत में बढ़ता बाजार क्षेत्र देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती शक्ति हिन्दी की हैसियत को भी बढ़ा रही है।

आज हिन्दी का ससं ार, बाजारवाद, व्यापार, तकनीकी क्रांति, विज्ञापन के कारण मीडिया क्रांति के साथ बढ़ रहा है। हिन्दी आज विश्वभाषा बनने की तैयारी में है। भारत ही नहीं विश्व के अनेक देशों में हिन्दी बोली और समझी जा रही है। यही नहीं विश्व के प्रायः सभी महत्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन किया जा रहा है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी पठन–पाठन हो रहा है। आज विश्वस्तर पर हिन्दी अपनी स्वंतत्र पहचान बना रही है। हिन्दी में विश्वभाषा बनने की समस्त संभावनाएं तथा विशेषताएं मौजूद हैं। हिन्दी के पास अपनी विशाल शब्द संपदा है। उसके पास उच्च कोटि की पारिभाषिक शब्दावली मौजूद है। वह विज्ञान तथा तकनीकी के नवीनतम आविष्कारों को अभिव्यक्ति देने में समर्थ भी है। हिन्दी में त्याग व ग्रहण की अभूतपूर्व क्षमता है। वह विश्व की समस्त भाषाओं से आवश्यकतानुसार शब्द ग्रहण कर स्वयं को समृद्ध बनाते हुए चल रही है। उसमें विश्व स्तरीय साहित्य मौजूद है तथा साहित्य सृजन की सुदीर्घ परंपरा व क्षमता मौजूद है। उसकी देव नागरी लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक व वर्तमान कम्प्यूटरीकृत तकनीक के लिए सर्वाधिक उपयुक्त लिपि है। हिन्दी विश्वचेतना की संवाहक है। जनसंचार माध्यमों के रूप में देश–विदेश में प्रयोग हो रही है तथा विश्व के नवीन आर्थिक परिवेश में तेजी से उभर रही है। साथ ही यह सीखने में सहज व सरल भी है।

विश्वस्तर पर हिन्दी के वर्चस्व को बढ़ाने में रेडियो, टेलीविजन, मीडिया, समाचार–पत्र–पत्रिकाएं, इंटरनेट, सिनेमा, विज्ञापन भी अपनी–अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं। तकनीकी क्षेत्र से उत्पन्न टेलीवीजन ने विश्वस्तर पर सूचना क्षेत्र में क्रांति ला दी है। वैश्विक दृष्टि से भारत में हिन्दी भाषा के विकास की संभावनाएं अत्यधिक बढ़ गई हैं।6 आज सेटेलाइट के जरिए टेलीवीजन के विभिन्न हिन्दी चैनल विभिन्न देशों में प्रसारित और लोकप्रिय हो रहे हैं।

आज मीडिया भी बहुआयामी हो चुका है और सामाचार पत्रों के मुद्रण, प्रकाशन तथा वितरण के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहे हैं।7 आज अनेक पत्र–पत्रिकाएं भारत ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी में ही प्रकाशित हो रहे हैं। 'इकोनामिक टाइम्स' तथा 'बिजनेस स्टडैर्ड जैसे अखबार आज हिन्दी में प्रकाशित हो रहे हैं। इलैक्ट्रॉनिक मीड़िया के क्षेत्र में अनेक न्यूज चैनल हिन्दी में ही प्रसारित हो रहे हैं। कई न्यूज चैनल जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे। आज बाजारीय दवाब तथा लोगों के रूझान को देखते हुए विशुद्ध हिन्दी चैनल के रूप में रूपांतरित होकर अच्छी टी. आर.पी. पा रहे हैं।

आज साहित्य के साथ ही तकनीकी, विज्ञान, कला, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, खेल, मनोरंजन आदि की पठनीय सामग्री भी हिन्दी में उपलब्ध हो रही है। हिंदी आज केवल साहित्यकारों की भाषा नहीं रही8 बल्कि इसके नए–नए आयाम विकसित हो रहे हैं। आज इंटरनेट पर भी साहित्यिक तथा ज्ञानवर्धक सामग्री हिन्दी में भी सहजता व सरलता से उपलब्ध है। गद्यकोश, कविताकोश, अभिव्यक्ति जैसी वैबसाइट हजारों सदस्यों के सक्रिय सहयोग से हिन्दी साहित्य के विश्वकोश का रूप ले चुकी हैं। प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर से लेकर अनेक समकालीन साहित्यकारों का साहित्य इन्टरनेट पर सुलभ है। यही नहीं कला, संस्कृति, धर्म, आध्यात्म, विज्ञान, अर्थशास्त्र, भाषा पर तमाम हिंदी वैबसाइट मौजूद हैं।9 माइक्रोसाफ्ट, गूगल, सन, याहू आरेकल, आई.बी.एन. जैसी विश्वस्तरीय कंपनियां एक विशाल बाजार और लाभ को देखते हुए हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं।

हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में भारतीय सिनेमा उद्योग भी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभा रहा है। हिंदी सिनेमा भारत ही नहीं, विश्व के अनेकों देशों में देखा और पसंद किया जा रहा है। हिन्दी गीत अपनी मधुरता के कारण अनेक गैर हिन्दी भाषी लोगों की जुबान पर चढ़े हुए हैं।

हिन्दी प्रचार प्रसार के क्षेत्र में विज्ञापन फिल्मों ने भी अपना कमाल दिखाया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में अनेक विदेशी कंपनियां भारतीय बाजार में अपना माल बेचने आ रही हैं। भारतीय उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए इन बहुराष्ट्रीय

www.ignited.in

कंपनियों के विज्ञापन हिंदी में ही बड़े आकर्षक ढंग से रचे–गढ़े जा रहे हैं।

मनोरंजन तथा ज्ञान के क्षेत्र में भी हिंदी का वर्चस्व तेजी से बढ़ा है। अनेक ज्ञानवर्धक चैनल यथा डिस्कवरी चैनल, नेशनल जियोग्राफिक चैनल तथा मनोरंजक चैनल यथा कार्टून नेटवर्क, स्टार स्पोर्ट्स आदि भी अपने कार्य में हिन्दी में प्रसारित करने लगे हैं। ऐसे में हिन्दी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्चस्व बढ़ा है। अपने ही देश में निरंतर उपेक्षा का शिकार और सरकारी सहयोग से वंचित हिन्दी भाषा आज स्वयं में मौजूद संभावनाओं एवं समयानुरूप अपने को विकसित करते रहने की सामर्थ्य के कारण तेजी से आगे बढ़ रही है। ऐसे में हिन्दी विश्व स्तर पर अपनी नई पहचान बना रही है। आज हिन्दी की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका स्वप्न नहीं रह गई है। यह नए विश्व मानव की एक मांग है और आने वाले भविष्य की एक जाज्वल्यमान वास्तविकता भी है।10

संदर्भ :

1. डॉ. वनिता त्रयंबक पवार, शोधलेख, रिसर्च लिंक–67.
2. माखनलाल चतुर्वेदी, संकलित।
3. डॉ अमरनाथ झा, परिवार, पृ. 39.
4. करुणा शंकर उपाध्याय, अक्षरा, जनवरी–फरवरी 2012, पृ. 106.
5. कृष्णदत्त पालीवाल, अक्षरा, जनवरी–फरवरी, पृ. 100.
6. प्रा. प्रकाश कोपार्डे, शोध लेख (टेलीवीजन और हिन्दी भाषा), रिसर्च लिंक, पृ. 58.
7. डॉ श्याम सुंदर दुबे, लोक जीवन में मीडिया की भूमिका।
8. अरुण कमल, कथोपकथन, पृ. 22.
9. रामचंद्रन राव, मधुरिमा, दैनिक भास्कर, 11 सितंबर 2013.
10. विद्यानिवास मिश्र, हिन्दी और हम, पृ. 104.